क़ुरबत या दूरी?

गुनाह का आग़ाज़

qurbat yā dūrī? gunāh kā āġhāz

Fellowship or Separation? The Advent of Sin

by Bakhtullah

[*Zinda Kalam 2*]

(Urdu—Hindi script)

© 2026 www.chashmamedia.org
published and printed by
GWCS, New Delhi

illus. J. Padgett
https://www.freebibleimages.org/illustrations/adam-eve-fall/

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

क़ुरबत तब रिश्ता 1

क़ुरबत तब सुकून 2

क़ुरबत तब यगांगत 4

दूरी तब ग़लतियाँ 6

दूरी तब ग़ुरूर 8

दूरी तब शर्म, डर और बहानाबाज़ी 9

दूरी तब मुसीबतें 14

दूरी तब सुकून ख़त्म 17

तौरेत, पैदाइश 2:4–3:24 20

तौरेत शुरू में फ़रमाती है कि ख़ुदा ने इनसान को अपनी सूरत पर बनाकर उसे दुनिया पर हुकूमत करने का इख़्तियार दिया। अब तौरेत रुककर मज़ीद सफ़ाई से बताती है कि इनसान किस तरह बन गया। पहली बात जो हम सीखते हैं,

क़ुरबत तब रिश्ता

लिखा है,

> रब ख़ुदा ने ज़मीन से मिट्टी लेकर इनसान को तशकील दिया और उसके नथनों में ज़िंदगी का दम फूँका तो वह जीती जान हुआ।

► **ख़ुदा ने इनसान को किस तरह बनाया?**

उसने मिट्टी लेकर उसे तशकील दिया, फिर उसके नथनों में ज़िंदगी का दम फूँका।

► **क्या ख़ुदा ने जानवरों में दम भी फूँका?**

नहीं।

► **तो फिर इनसान में दम फूँकने से क्या ज़ाहिर हुआ?**

यह ज़ाहिर हुआ कि ख़ुदा का इनसान से एक ख़ास रिश्ता है। जानवरों का ख़ुदा से यह रिश्ता नहीं है।

► **अगर हमारा ख़ास रिश्ता है तो फिर ख़ुदा हमसे क्या चाहता है?**

वह चाहता है कि हम उससे अच्छा रिश्ता रखें। हम ऐसा काम करें जिससे वह ख़ुश हो। दूसरी बात,

क़ुरबत तब सुकून

फिर लिखा है,

> रब ख़ुदा ने पहले आदमी को बाग़े-अदन में रखा ताकि वह उसकी बाग़बानी और हिफ़ाज़त करे। लेकिन रब ख़ुदा ने उसे आगाह किया, "तुझे हर दरख़्त का फल खाने की इजाज़त है। लेकिन जिस दरख़्त का फल अच्छे और बुरे की पहचान दिलाता है उसका फल खाना मना है। अगर उसे खाए तो यक़ीनन मरेगा।"

► **ख़ुदा ने पहले आदमी को कहाँ रखा?**

बाग़े-अदन में।

► **यह कैसा बाग़ था?**

एक ऐसा बाग़ जिसमें आदमी जी भरकर खा सकता था। उसमें वह सुकून से रह सकता था।

► **ख़ुदा ने उसे एक ज़िम्मेदारी भी दी। वह क्या?**

बाग़ की बाग़बानी और हिफ़ाज़त।

► **इससे ख़ुदा ने क्या ज़ाहिर किया?**

यह कि बाग़ में यह आदमी मेरा नुमाइंदा है जिससे मैं ख़ुश हूँ। जिस तरह मैं दुनिया की रखवाली करता हूँ उसी तरह वह बाग़ की रखवाली करेगा।

► **लेकिन ख़ुदा ने उसे एक संजीदा बात भी बताई। वह क्या?**

हर दरख़्त का फल खाओ, मगर एक दरख़्त का फल मत खाना—उसका जो अच्छे और बुरे की पहचान दिलाता है। तीसरी बात,

क़ुरबत तब यगांगत

लिखा है,

> रब ख़ुदा ने कहा, "अच्छा नहीं कि आदमी अकेला रहे। मैं उसके लिए एक मुनासिब मददगार बनाता हूँ।"

► **अब तक आदमी अकेला ही था। लेकिन ख़ुदा जानता था कि यह अच्छा नहीं है। तब उसने क्या फ़रमाया?**

यह फ़रमाया कि मैं उसके लिए एक मुनासिब मददगार बनाता हूँ। आगे लिखा है,

> तब रब ख़ुदा ने उसे सुला दिया। जब वह गहरी नींद सो रहा था तो उसने उसकी पसलियों में से एक निकालकर उसकी जगह गोश्त भर दिया। पसली से उसने औरत बनाई और उसे आदमी के पास ले आया। उसे देखकर वह पुकार उठा, "वाह! यह तो मुझ जैसी ही है, मेरी हड्डियों में से हड्डी और मेरे गोश्त में से गोश्त है। इसका नाम नारी रखा जाए क्योंकि वह नर से निकाली गई है।" इसलिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है, और वह दोनों एक हो जाते हैं। दोनों, आदमी और औरत नंगे थे, लेकिन यह उनके लिए शर्म का बाइस नहीं था।

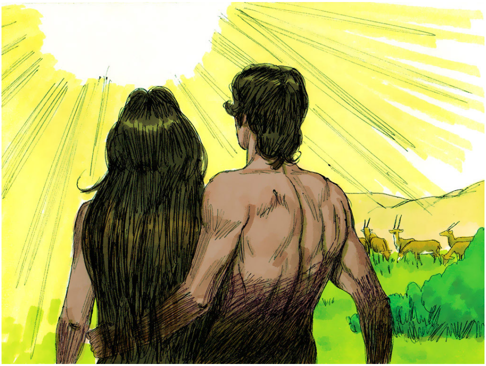

- **ख़ुदा ने औरत को किस तरह बनाया?**

  उसने आदमी की एक पसली निकालकर उसे बनाया।

- **तब आदमी ने क्या पुकार उठा?**

  वाह! यह तो मुझ जैसी ही है, मेरी हड्डियों में से हड्डी और मेरे गोश्त में से गोश्त है।

- **इससे वह क्या कहना चाहता था?**

  यह मेरी ख़ूनी रिश्तेदार है। यह न सिर्फ़ कठपुतली या जानवर है। यह मेरी तरह इनसान है जो सोच सकती है, हाँ मेरे साथ बात भी कर सकती है। यह सचमुच मुनासिब मददगार है, क्योंकि अब हम मिलकर ज़िंदगी का मज़ा ले सकते हैं।

- **इसलिए मर्द शादी के बाद क्या करता है?**

> वह अपने माँ-बाप को छोड़कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है, और वह दोनों एक हो जाते हैं। बेशक वह माँ-बाप की बरकत के तहत रहते हैं, लेकिन अब उनकी अपनी फ़ैमिली है।

कितनी शानदार ज़िंदगी! आदम और हव्वा कितने ख़ुश थे! वह एक ख़ूबसूरत बाग़ में रहते थे। वह अपने मालिको-ख़ालिक़ और एक दूसरे से मुहब्बत रखते थे। ख़ुदा की क़ुरबत उन्हें हासिल थी, उसके साथ अच्छा रिश्ता उनके दिलों को सुकून दिलाता था। साथ साथ उनका एक दूसरे से रिश्ता अच्छा था, पूरी यगांगत थी। लेकिन जल्द ही इस दुनिया पर साया छा गया—गुनाह और मौत का साया। इस लिए चौथी बात,

दूरी तब ग़लतियाँ

लिखा है,

> साँप ज़मीन पर चलने-फिरनेवाले उन तमाम जानवरों से ज़्यादा चालाक था जिनको रब ख़ुदा ने बनाया था। उसने औरत से पूछा, "क्या अल्लाह ने वाक़ई कहा कि बाग़ के किसी भी दरख़्त का फल न खाना?"

► **क्या साँप ने कहा कि ख़ुदा ने झूठ बोला?**

नहीं। उसने बातें आगे-पीछे करके सीधी-सी बात उसके उलट में बदल दिया।

► **ख़ुदा ने तो एक ही दरख़्त का फल खाना मना किया था। अब साँप ने यह बात थोड़ा बदल दिया। किस तरह?**

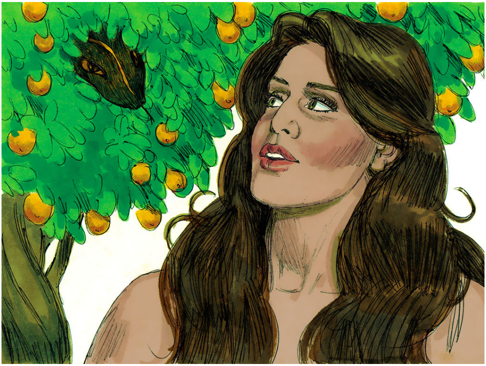

उसने पूछा, क्या ख़ुदा ने वाक़ई हर दरख़्त का फल खाना मना किया? जहाँ ख़ुदा ने एक दरख़्त का फल मना किया वहाँ साँप ने हर दरख़्त की बात की और यों औरत के ज़हन में शक का बीज डाल दिया। आगे लिखा है,

> औरत ने जवाब दिया, "हरगिज़ नहीं। हम बाग़ का हर फल खा सकते हैं, सिर्फ़ उस दरख़्त के फल से गुरेज़ करना है जो बाग़ के बीच में है। अल्लाह ने कहा कि उसका फल न खाओ बल्कि उसे छूना भी नहीं, वरना तुम यक़ीनन मर जाओगे।"

► **क्या आपने नोट किया? औरत की बात सही तो थी, लेकिन बीच में एक ग़लत बात भी आ गई। वह क्या?**

ख़ुदा ने नहीं फ़रमाया था कि दरख़्त को छूना भी नहीं। ख़ुदा ने सिर्फ़ इतना ही कहा था कि उस का फल मत खाना। मतलब है, शक का बीज उग आया था।

ऐसी बहुत-सारी छोटी-मोटी ग़लतियों से साँप ने औरत को वरग़लाया।

► **इससे हम क्या सीखते हैं?**

यह कि हम ऐसी छोटी-मोटी ग़लतियों से बचे रहें। छोटे गुनाह बड़े गुनाहों तक ले जाते हैं। अब पाँचवीं बात,

दूरी तब ग़ुरूर

लिखा है,

> साँप ने औरत से कहा, "तुम हरगिज़ न मरोगे, बल्कि अल्लाह जानता है कि जब तुम उसका फल खाओगे तो तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी और तुम अल्लाह की मानिंद हो जाओगे, तुम जो भी अच्छा और बुरा है उसे जान लोगे।"

► **अब साँप ने औरत को लालच दिलाया। किस तरह?**

ख़ुदा ने फ़रमाया था कि यह दरख़्त अच्छे और बुरे की पहचान दिलाता है। अब साँप ने यह लालच दिलाया कि तुम अल्लाह की मानिंद हो जाओगे। जो भी अच्छा और बुरा है उसे तुम जान लोगे।

► **ख़ुदा की मानिंद होना : क्या यह मुनासिब ख़याल है?**

बिलकुल नहीं। न इनसान कभी ख़ालिक़ बन सकता है, न वह उसकी तरह सब कुछ जान सकता है। इसी सोच से कि हम ख़ुदा की मानिंद हो सकते हैं गुनाह का आग़ाज़ हुआ। यही गुनाह की कड़वी जड़ है।

► **जो सोचता है कि वह ख़ुदा की मानिंद बन सकता है वह किस क़िस्म का इनसान है?**

वह मग़रूर है। ख़ुदा जैसा बनने के पीछे ग़ुरूर और घमंड है। यों हम देखते हैं कि गुनाह छोटी-मोटी ग़लतियों से शुरू होकर ग़ुरूर तक पहुँच गया। इसका क्या नतीजा निकला? छटी बात,

दूरी तब शर्म, डर और बहानाबाज़ी

लिखा है,

औरत ने दरख़्त पर ग़ौर किया कि खाने के लिए अच्छा और देखने में भी दिलकश है। सबसे दिलफ़रेब बात यह कि उससे समझ हासिल हो सकती है! यह सोचकर उसने उसका फल लेकर उसे खाया। फिर उसने अपने शौहर को भी दे दिया, क्योंकि वह उसके साथ था। उसने भी खा लिया। लेकिन खाते ही उनकी आँखें खुल गईं और उनको मालूम हुआ कि हम नंगे हैं। चुनाँचे उन्होंने अंजीर के पत्ते सी कर लुंगियाँ बना लीं।

► **जब दोनों ने फल खाया तो क्या हुआ?**

उनकी आँखें खुल गईं।

► **क्या आँखें खुलने का ख़ास फ़ायदा हुआ?**

नहीं। बस उन्हें मालूम हुआ कि वह नंगे हैं।

► **पहले उन्हें महसूस नहीं था कि वह नंगे हैं। क्यों नहीं?**

उनका एक दूसरे से और ख़ुदा से ताल्लुक़ गुनाह से बिगड़ नहीं गया था इसलिए शर्म महसूस करने की ज़रूरत नहीं थी।

► **अब उन्होंने अपनी शर्म छुपाने के लिए क्या किया?**

उन्होंने अंजीर के पत्ते सी कर लुंगियाँ बना लीं।

लिखा है,

> शाम के वक़्त जब ठंडी हवा चलने लगी तो उन्होंने रब ख़ुदा को बाग़ में चलते-फिरते सुना। वह डर के मारे दरख़्तों के पीछे छुप गए। रब ख़ुदा ने पुकारकर कहा, "आदम, तू कहाँ है?" आदम ने जवाब दिया, "मैंने तुझे बाग़ में चलते हुए सुना तो डर गया, क्योंकि मैं नंगा हूँ।

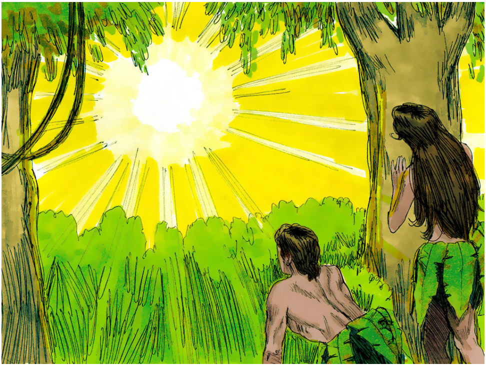

> इसलिए मैं छुप गया।” उसने पूछा, “किसने तुझे बताया कि तू नंगा है? क्या तूने उस दरख़्त का फल खाया है जिसे खाने से मैंने मना किया था?” आदम ने कहा, “जो औरत तूने मेरे साथ रहने के लिए दी है उसने मुझे फल दिया। इसलिए मैंने खा लिया।” अब रब ख़ुदा औरत से मुख़ातिब हुआ, “तूने यह क्यों किया?” औरत ने जवाब दिया, “साँप ने मुझे बहकाया तो मैंने खाया।”

► **पहले आदम और हव्वा ख़ुशी से ख़ुदा के हुज़ूर आते थे। अब उसकी आवाज़ सुनकर उन्होंने क्या किया?**

वह डर के मारे दरख़्तों के पीछे छुप गए। अब उनके और ख़ुदा के दरमियान गुनाह की ख़ला आ गई थी।

अब ध्यान दें कि ख़ुदा ने क्या किया। वह तो पहले से सब कुछ जानता था। जो उसने अभी किया वह उसने उन्हें समझाने के लिए किया। पहले उसने आदम को आवाज़ दी।

► **जब आदम सामने आया तो आदम ने क्या कहा?**

मैं डर गया, क्योंकि मैं नंगा था। डर और शर्म ज़ाहिर हुई।

► **ख़ुदा दोनों की पूछ-गछ करने लगा। जवाब में वह क्या करने लगे?**

वह बहाने बनाने लगे। आदम ने औरत को क़ुसूरवार ठहराया, और औरत ने साँप को क़ुसूरवार ठहराया। दूसरों को क़ुसूरवार ठहराना, यह हम सबका आज़माया हुआ तरीक़ा होता है। सातवीं बात,

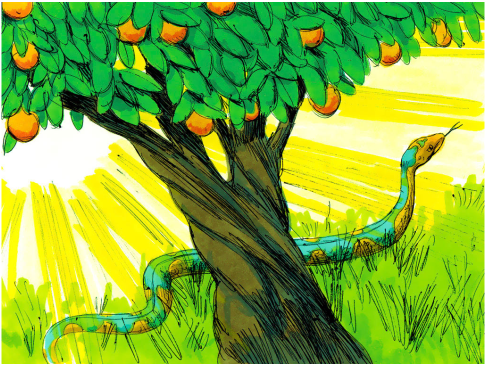

दूरी तब मुसीबतें

लिखा है,

> रब ख़ुदा ने साँप से कहा, “चूँकि तूने यह किया, इसलिए तू तमाम मवेशियों और जंगली जानवरों में लानती है। तू उम्र भर पेट के बल रेंगेगा और ख़ाक चाटेगा। मैं तेरे और औरत के दरमियान दुश्मनी पैदा करूँगा। उसकी औलाद तेरी औलाद की दुश्मन होगी। वह तेरे सर को कुचल डालेगी जबकि तू उसकी एड़ी पर काटेगा।”

► **ख़ुदा ने साँप को क्या सज़ा दी?**

उसने फ़रमाया कि तू लानती है। तू पेट के बल रेंगेगा और ख़ाक चाटेगा। साथ साथ तेरे और औरत के दरमियान दुश्मनी रहेगी।

► **ख़ुदा की बात में एक वादा भी शामिल है। वह क्या?**

साँप तो औरत की एड़ी पर काटेगा मगर औरत उसका सर कुचल डालेगी।

► **इसका क्या मतलब है?**

यह मुस्तक़बिल के बारे में एक पेशगोई है। साँप के पीछे तो इबलीस है। इबलीस औरत को नुक़सान पहुँचता रहेगा लेकिन एक वक़्त आएगा जब औरत उसका सर कुचल डालेगी।

► **यह किस तरह हो जाएगा?**

एक वक़्त आएगा जब औरत से पैदा हुआ अल-मसीह आकर इबलीस को शिकस्त देगा। आगे लिखा है,

> फिर रब ख़ुदा औरत से मुख़ातिब हुआ और कहा, “जब तू उम्मीद से होगी तो मैं तेरी तकलीफ़ को बहुत बढ़ाऊँगा। जब तेरे बच्चे होंगे तो तू शदीद दर्द का शिकार होगी। तू अपने शौहर की तमन्ना करेगी लेकिन वह तुझ पर हुकूमत करेगा।”

► **औरत की सज़ा क्या है?**

बच्चों को जन्म देते वक़्त वह शदीद दर्द का शिकार होगी। साथ साथ शौहर के साथ ताल्लुक़ में वह यगांगत नहीं रहेगी जो पहले थी। पहले वह बराबर और यक-दिल थे। अब झगड़ा और एक दूसरे को दबाने का रुझान क़ायम रहेगा। फिर लिखा है,

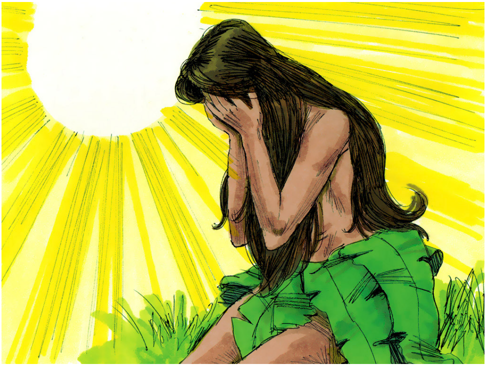

> आदम से उसने कहा, “तूने अपनी बीवी की बात मानी और उस दरख़्त का फल खाया जिसे खाने से मैंने मना किया था। इसलिए तेरे सबब से ज़मीन पर लानत है। उससे ख़ुराक हासिल करने के लिए तुझे उम्र भर मेहनत-मशक़्क़त करनी पड़ेगी। तेरे लिए वह ख़ारदार पौधे और ऊँटकटारे पैदा करेगी, हालाँकि तू उससे अपनी ख़ुराक भी हासिल करेगा। पसीना बहा बहाकर तुझे रोटी कमाने के लिए भाग-दौड़ करनी पड़ेगी। और यह सिलसिला मौत तक जारी रहेगा। तू मेहनत करते करते दुबारा ज़मीन में लौट जाएगा, क्योंकि तू उसी से लिया गया है। तू ख़ाक है और दुबारा ख़ाक में मिल जाएगा।”

► **आदम की क्या सज़ा है?**

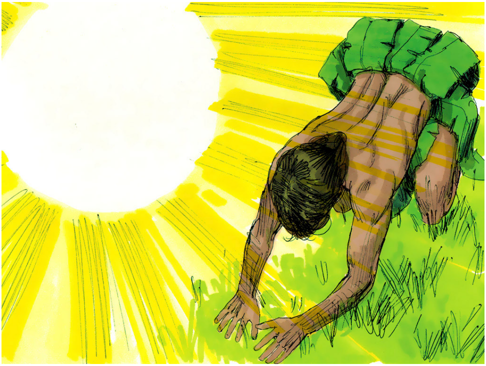

> आइंदा उसे ख़ुराक हासिल करने के लिए बड़ी मेहनत-मशक़्क़त करनी पड़ेगी। दूसरे, आख़िर में वह मरकर दुबारा उस मिट्टी में बदल जाएगा जिससे बन गया था।

तब ख़ुदा ने उनके लिए खालों से लिबास बनाकर उन्हें पहनाया। वह जानता था कि जो कच्चे कपड़े उन्होंने पत्तों से अपने लिए बनाए थे वह बेकार हैं। आठवीं बात,

दूरी तब सुकून ख़त्म

लिखा है,

> उसने कहा, "इनसान हमारी मानिंद हो गया है, वह अच्छे और बुरे का इल्म रखता है। अब ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ाकर ज़िंदगी बख़्शनेवाले दरख़्त के फल से ले और

> उससे खाकर हमेशा तक ज़िंदा रहे।” इसलिए रब ख़ुदा ने उसे बाग़े-अदन से निकालकर उस ज़मीन की खेतीबाड़ी करने की ज़िम्मेदारी दी जिसमें से उसे लिया गया था। इनसान को ख़ारिज करने के बाद उसने बाग़े-अदन के मशरिक़ में करूबी फ़रिश्ते खड़े किए और साथ साथ एक आतिशी तलवार रखी जो इधर-उधर घूमती थी ताकि उस रास्ते की हिफ़ाज़त करे जो ज़िंदगी बख़्शनेवाले दरख़्त तक पहुँचाता था।

► **साँप ने कहा था कि तुम अल्लाह की मानिंद हो जाओगे। अब ख़ुदा फ़रमाता है कि एक हद तक यह हो भी गया था। किस तरह?**

अब वह बुरा काम करके अच्छे और बुरे का इल्म रखते थे।

- ► **यह देखकर ख़ुदा ने एक बहुत ज़रूरी काम किया। वह क्या?**

  बाग़ में एक दरख़्त था, जिसका फल खाकर इनसान हमेशा तक ज़िंदा रह सकता था। इसलिए ख़ुदा ने उन्हें बाग़ से ख़ारिज करके बाग़ के दरवाज़े पर फ़रिश्ते खड़े किए ताकि इनसान आइंदा बाग़ में दाख़िल न हो सके।

- ► **यह काम क्यों ज़रूरी था?**

  अगर वह उस फल से खा लेते तो अबद तक ज़िंदा रहते। नाक़िस हालत में अबद तक ज़िंदा रहना एक बहुत बुरी बात होती। ख़ुदा का एक और मनसूबा था। बाद में एक आएगा जो अल-मसीह कहलाएगा। वह इनसान को उसके गुनाहों से नजात देकर उसका ख़ुदा से ताल्लुक़ ठीक करेगा। उस पर ईमान लाकर इनसान को अबदी ज़िंदगी मिलेगी।

ग़रज़ हमने देख लिया है कि जब हम ख़ुदा के क़रीब रहते हैं तब ही हमारा उससे रिश्ता अच्छा रहता है, तब ही हमें सुकून और यगांगत हासिल है। जब हम गुनाह के बाइस उससे दूर हो जाते हैं तब हमसे ग़लतियाँ होती रहती हैं और हम मग़रूर हो जाते हैं। नतीजे में हम शर्म, डर और बहानाबाज़ी का शिकार हो जाते हैं। हम मुसीबतों में उलझे रहते हैं और पहला जैसा सुकून ख़त्म हो जाता है।

फिर भी ख़ुदा ने आदम और हव्वा को उम्मीद दिलाई कि एक वक़्त आएगा जब अल-मसीह दुनिया में आकर इबलीस को शिकस्त देगा।

उस वक़्त जो उस पर ईमान लाएगा वह अबदी ज़िंदगी और हमेशा का सुकून पाएगा।

तौरेत, पैदाइश 2:4–3:24

यह आसमानो-ज़मीन की तख़लीक़ का बयान है। जब रब ख़ुदा ने आसमानो-ज़मीन को बनाया तो शुरू में झाड़ियाँ और पौधे नहीं उगते थे। वजह यह थी कि अल्लाह ने बारिश का इंतज़ाम नहीं किया था। और अभी इनसान भी पैदा नहीं हुआ था कि ज़मीन की खेतीबाड़ी करता। इसकी बजाए ज़मीन में से धुंद उठकर उसकी पूरी सतह को तर करती थी। फिर रब ख़ुदा ने ज़मीन से मिट्टी लेकर इनसान को तशकील दिया और उसके नथनों में ज़िंदगी का दम फूँका तो वह जीती जान हुआ।

रब ख़ुदा ने मशरिक़ में मुल्के-अदन में एक बाग़ लगाया। उसमें उसने उस आदमी को रखा जिसे उसने बनाया था। रब ख़ुदा के हुक्म पर ज़मीन में से तरह तरह के दरख़्त फूट निकले, ऐसे दरख़्त जो देखने में दिलकश और खाने के लिए अच्छे थे। बाग़ के बीच में दो दरख़्त थे। एक का फल ज़िंदगी बख़्शता था जबकि दूसरे का फल अच्छे और बुरे की पहचान दिलाता था। अदन में से एक दरिया निकलकर बाग़ की आबपाशी करता था। वहाँ से बहकर वह चार शाख़ों में तक़सीम हुआ। पहली शाख़ का नाम फ़ीसून है। वह

मुल्के-हवीला को घेरे हुए बहती है जहाँ ख़ालिस सोना, गूगल का गूँद और अक़ीक़े-अहमर पाए जाते हैं। दूसरी का नाम जैहून है जो कूश को घेरे हुए बहती है। तीसरी का नाम दिजला है जो असूर के मशरिक़ को जाती है और चौथी का नाम फ़ुरात है।

रब ख़ुदा ने पहले आदमी को बाग़े-अदन में रखा ताकि वह उसकी बाग़बानी और हिफ़ाज़त करे। लेकिन रब ख़ुदा ने उसे आगाह किया, "तुझे हर दरख़्त का फल खाने की इजाज़त है। लेकिन जिस दरख़्त का फल अच्छे और बुरे की पहचान दिलाता है उसका फल खाना मना है। अगर उसे खाए तो यक़ीनन मरेगा।"

रब ख़ुदा ने कहा, "अच्छा नहीं कि आदमी अकेला रहे। मैं उसके लिए एक मुनासिब मददगार बनाता हूँ।"

रब ख़ुदा ने मिट्टी से ज़मीन पर चलने-फिरनेवाले जानवर और हवा के परिंदे बनाए थे। अब वह उन्हें आदमी के पास ले आया ताकि मालूम हो जाए कि वह उनके क्या क्या नाम रखेगा। यों हर जानवर को आदम की तरफ़ से नाम मिल गया। आदमी ने तमाम मवेशियों, परिंदों और ज़मीन पर फिरनेवाले जानदारों के नाम रखे। लेकिन उसे अपने लिए कोई मुनासिब मददगार न मिला।

तब रब ख़ुदा ने उसे सुला दिया। जब वह गहरी नींद सो रहा था तो उसने उसकी पसलियों में से एक निकालकर उसकी जगह गोश्त भर दिया। पसली से उसने औरत बनाई और उसे आदमी के पास

ले आया। उसे देखकर वह पुकार उठा, “वाह! यह तो मुझ जैसी ही है, मेरी हड्डियों में से हड्डी और मेरे गोश्त में से गोश्त है। इसका नाम नारी रखा जाए क्योंकि वह नर से निकाली गई है।” इसलिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है, और वह दोनों एक हो जाते हैं। दोनों, आदमी और औरत नंगे थे, लेकिन यह उनके लिए शर्म का बाइस नहीं था।

साँप ज़मीन पर चलने-फिरनेवाले उन तमाम जानवरों से ज़्यादा चालाक था जिनको रब ख़ुदा ने बनाया था। उसने औरत से पूछा, “क्या अल्लाह ने वाक़ई कहा कि बाग़ के किसी भी दरख़्त का फल न खाना?” औरत ने जवाब दिया, “हरगिज़ नहीं। हम बाग़ का हर फल खा सकते हैं, सिर्फ़ उस दरख़्त के फल से गुरेज़ करना है जो बाग़ के बीच में है। अल्लाह ने कहा कि उसका फल न खाओ बल्कि उसे छूना भी नहीं, वरना तुम यक़ीनन मर जाओगे।” साँप ने औरत से कहा, “तुम हरगिज़ न मरोगे, बल्कि अल्लाह जानता है कि जब तुम उसका फल खाओगे तो तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी और तुम अल्लाह की मानिंद हो जाओगे, तुम जो भी अच्छा और बुरा है उसे जान लोगे।”

औरत ने दरख़्त पर ग़ौर किया कि खाने के लिए अच्छा और देखने में भी दिलकश है। सबसे दिलफ़रेब बात यह कि उससे समझ हासिल हो सकती है! यह सोचकर उसने उसका फल लेकर उसे

खाया। फिर उसने अपने शौहर को भी दे दिया, क्योंकि वह उसके साथ था। उसने भी खा लिया। लेकिन खाते ही उनकी आँखें खुल गईं और उनको मालूम हुआ कि हम नंगे हैं। चुनाँचे उन्होंने अंजीर के पत्ते सी कर लुंगियाँ बना लीं।

शाम के वक़्त जब ठंडी हवा चलने लगी तो उन्होंने रब ख़ुदा को बाग़ में चलते-फिरते सुना। वह डर के मारे दरख़्तों के पीछे छुप गए। रब ख़ुदा ने पुकारकर कहा, "आदम, तू कहाँ है?" आदम ने जवाब दिया, "मैंने तुझे बाग़ में चलते हुए सुना तो डर गया, क्योंकि मैं नंगा हों। इसलिए मैं छुप गया।" उसने पूछा, "किसने तुझे बताया कि तू नंगा है? क्या तूने उस दरख़्त का फल खाया है जिसे खाने से मैंने मना किया था?" आदम ने कहा, "जो औरत तूने मेरे साथ रहने के लिए दी है उसने मुझे फल दिया। इसलिए मैंने खा लिया।"

अब रब ख़ुदा औरत से मुख़ातिब हुआ, "तूने यह क्यों किया?" औरत ने जवाब दिया, "साँप ने मुझे बहकाया तो मैंने खाया।"

रब ख़ुदा ने साँप से कहा, "चूँकि तूने यह किया, इसलिए तू तमाम मवेशियों और जंगली जानवरों में लानती है। तू उम्र भर पेट के बल रेंगेगा और ख़ाक चाटेगा। मैं तेरे और औरत के दरमियान दुश्मनी पैदा करूँगा। उसकी औलाद तेरी औलाद की दुश्मन होगी। वह तेरे सर को कुचल डालेगी जबकि तू उसकी एड़ी पर काटेगा।"

फिर रब ख़ुदा औरत से मुख़ातिब हुआ और कहा, “जब तू उम्मीद से होगी तो मैं तेरी तकलीफ़ को बहुत बढ़ाऊँगा। जब तेरे बच्चे होंगे तो तू शदीद दर्द का शिकार होगी। तू अपने शौहर की तमन्ना करेगी लेकिन वह तुझ पर हुकूमत करेगा।” आदम से उसने कहा, “तूने अपनी बीवी की बात मानी और उस दरख़्त का फल खाया जिसे खाने से मैंने मना किया था। इसलिए तेरे सबब से ज़मीन पर लानत है। उससे ख़ुराक हासिल करने के लिए तुझे उम्र भर मेहनत-मशक़्क़त करनी पड़ेगी। तेरे लिए वह ख़ारदार पौधे और ऊँटकटारे पैदा करेगी, हालाँकि तू उससे अपनी ख़ुराक भी हासिल करेगा। पसीना बहा बहाकर तुझे रोटी कमाने के लिए भाग-दौड़ करनी पड़ेगी। और यह सिलसिला मौत तक जारी रहेगा। तू मेहनत करते करते दुबारा ज़मीन में लौट जाएगा, क्योंकि तू उसी से लिया गया है। तू ख़ाक है और दुबारा ख़ाक में मिल जाएगा।”

आदम ने अपनी बीवी का नाम हव्वा यानी ज़िंदगी रखा, क्योंकि बाद में वह तमाम ज़िंदों की माँ बन गई। रब ख़ुदा ने आदम और उसकी बीवी के लिए खालों से लिबास बनाकर उन्हें पहनाया। उसने कहा, “इनसान हमारी मानिंद हो गया है, वह अच्छे और बुरे का इल्म रखता है। अब ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ाकर ज़िंदगी बख़्शनेवाले दरख़्त के फल से ले और उससे खाकर हमेशा तक ज़िंदा रहे।” इसलिए रब ख़ुदा ने उसे बाग़े-अदन से निकालकर उस ज़मीन की

खेतीबाड़ी करने की ज़िम्मेदारी दी जिसमें से उसे लिया गया था। इनसान को ख़ारिज करने के बाद उसने बाग़े-अदन के मशरिक़ में करूबी फ़रिश्ते खड़े किए और साथ साथ एक आतिशी तलवार रखी जो इधर-उधर घूमती थी ताकि उस रास्ते की हिफ़ाज़त करे जो ज़िंदगी बख़्शनेवाले दरख़्त तक पहुँचाता था।